अेताक्षरी

कहानी माला—30

वरदान

—विजयदान देथा

वरदान

—विजयदान देथा

एक जूं अपने पति से झगड़कर दूसरा घरवास करने के लिए जा रही थी। रास्ते में एक कबूतर मिला। पूछा—'जूं जूं, कहां चली?' जूं ने जवाब दिया : दूसरा घरवास करने!

कबूतर ने प्रेमातुर स्वर में कहा—'मुझसे घरवास करेगी?' जूं ने पूछा तू मेरी क्या विशेष खातिर करेगा?

कबूतर ने कहा—पांखें बिछाऊंगा, पांखें ओढ़ाऊंगा, दाना चुगाऊंगा और गुटरगूं के मीठे गीत सुनाऊंगा।

जूं बोली—ऊं हुं, तुमसे कौन घरवास करे। यह कहकर वह तो नेवरियों की छमाछम बजाती आगे बढ़ गई। रास्ते में उसे एक कौआ मिला। पूछा :

'जूं जूं, कहां चली तू?' जूं ने जवाब दिया—दूसरा घरवास करने!

कौए ने प्रेम से विगलित स्वर में कहा—मुझसे घरवास करेगी?

जूं ने पूछा—तू मेरी क्या विशेष खातिर करेगा।

कौए ने कहा—दही-रोटी खिलाऊंगा दूध पिलाऊंगा और कांव कांव के मीठे गीत सुनाऊंगा।

जूं ने कहा—'ऊं हुं, तुझसे कौन घरवास करे।' यह कहकर वह तो बाजूबंद की लूंबो को लहराती हुई आगे बढ़ गई। रास्ते में उसे बैल मिला। पूछा- 'जूं जूं कहां चली?' जूं ने जवाब दिया—दूसरा घरवास करने।

बैल ने कहा—'मुझसे करेगी घरवास?' जूं ने पूछा—'तू मेरी क्या विशेष खातिर करेगा?' बैल ने धड़ूकते हुए कहा—घास चराऊंगा, बांटा खिलाऊंगा, तिलों की कच्चर खिलाऊंगा, सींगो पर बिठाये बिठाये फिरूंगा और धड़ूक धड़ूक कर मीठे गीते सुनाऊंगा।

जूं ने कहा—'ऊं हुं, तुझसे घरवास कौन करे!' यह कहकर वह रेशमीन घघरिया को सरसराती हुई आगे बढ़ गई। रास्ते में उसे एक बकरा मिला। पूछा—'जूं जूं, कहां चली?' जूं ने कहा—'दूसरा घरवास करने।'बकरे ने कहा—'मुझसे घरवास करेगी?' तब जूं ने पूछा—तू मेरी क्या विशेष खातिर करेगा?

बकरे ने गरदन हिलाते हुए जवाब दिया—'गेहूं खिलाऊंगा, पाला चराऊंगा, पूंछ पर बिठाये झूला झुलाऊंगा और बें बें के मीठे गीत सुनाऊंगा।' तब जूं ने कहा—'ऊं हूं, तुझसे घरवास कौन करे!' यह कहकर वह चूड़े को चटकाती हुई आगे बढ़ गई। रास्ते में उसे एक चूहा मिला। प्यार से पूछा—जूं जूं, कहां चली?

जूं ने कहा—'दूसरा घरवास करने।' चूहे ने कहा—'मुझसे घरवास

करेगी?' तब जूं ने आगे पूछा—तू क्या मेरी विशेष खातिर करेगा?

चूहे ने प्रेम से फदाफद कूदते हुए कहा—रानियों के कपड़े पहिनाऊंगा, घी के तले घेवर खिलाऊंगा, गुड़ के गुलगुले खिलाऊंगा और कुटकुट के मीठे गीत सुनाऊंगा।

यह सुनकर जूं लम्बा घूघंट निकालते हुए, कुछ शरमाकर बोली— 'हां, आपसे घरवास कर लूंगी।' यों रास्ते चलते जूं व चूहे का घरवास हो गया। दोनों मौज से रहने लगे। जूं रानियों के कपड़ों में ठसी रहती। चूहा उसे घेवर खिलाकर गुलगुले खिलाता और गुलगुले खिलाकर घेवर खिलाता। जूं को तिल्ली के तेल में तले गुड़ के गुलगुले खूब अच्छे लगते और वे भी गरमागरम व ताजे ताजे। तले गुलगुलों व गुड़ की अधिकता के कारण जूं का खून विकृत हो गया। सारे शरीर में खाज चलने लगी। नाखूनों से

मार नोचने के कारण उसकी देह खून से रिसने लगी। चूह न इलाज-उपचार में कोई कसर नहीं रखी। पर सब अकारथ! खाज इस कदर बढ़ी कि देखते देखते उसे कोढ़ की बीमारी हो गई। सारा शरीर चूने लगा। चूहे ने उसकी बेहद सेवा-बंदगी की, किन्तु रंचमात्र भी लाभ नहीं हुआ। कोढ़ झरने के बावजूद भी वह गुलगुले खाने से परहेज नहीं करती। सोचा कि एक दिन मरना तो है ही, फिर मन में क्यों रखी जाय!

एक बार बड़ी कड़ाई में गुलगुले निकालते समय वह झुककर तेल का खौलना देखने लगी। संयोग का खेल कि झुकते ही उसका पांव रपट गया। मारने वाले से बचाने वाला बड़ा। संयोग की लीला कि खौलते तेल में गिरने से जूं का कोढ़ मिट गया। वह झटपट बाहर निकली। कंचन के समान उसकी सुन्दर देह हो गई। वह तो नई दुल्हन को भी मात करती सी दिखाई दी। जूं का सारा विकृत खून कड़ाई में झर गया। सारा तेल गहरा लाल

हो गया। गुलगुले निकालने के काम का नहीं रहा। तब चूहे और जू ने मिलकर कड़ाई के कड़े पकड़ सारा का सारा तेल तालाब में उंडेल दिया। तेल उंडेलते ही तालाब का पानी भी गहरा लाल हो गया।

तालब ने जूं से कहा—मेरी बहिना, यह क्या किया तूने? सारा पानी खराब कर दिया। अब कौन पंछी-जानवर यह गंदा पानी पीयेगा। जूं ने वापस नम्रता से उत्तर दिया—बहिन गलती तो मुझसे हो गई, माफ करना। ठंडे कलेजे से मैं तुझे आशिष देती हूं कि तेरा पानी वापस बादलों के जल जैसा निर्मल हो जायेगा।

जूं और चूहे के जाने पर वहाँ भ्रमर के काले हंस आये। उन्होंने सरवर से पूछा—कल तुम्हारा पानी निर्मल व स्वच्छ था, आज इतना लाल कैसे? सरवर ने लहरियां थिरकाते हुए जूं वाली सारी बात बताई। फिर उसने

ठंडी आहें भरते हुए कहा—तुम अपनी पांखो से मेरा पानी झकोलो तो वह वापस वर्षा-जल जैसा निर्मल हो जायेगा।

हंसो ने कहा—'हमको इसमें क्या जोर पड़ेगा! हमारी शोभा तुमसे है और तुम्हारी शोभा हमसे।' यह कहकर सभी हंस अपनी पांखे फड़फड़ाकर पानी झकोलने लगे। और इतना झकोला कि सरवर पहिले जैसा ही निर्मल व स्वच्छ हो गया। तब सरवर ने ठंडे कलेजे से हंसो को आशिष दी—उजली पांखो हंस!

सरवर की आशिष के साथ ही सभी हंस दूध के समान धवल हो गये। पहिले हंसो का रंग काला होता था। उस दिन से ही हंस हिमवत उजले होने लगे।

हंसो की धवल पांत खुशी में उड़ती हुई जा रही थी कि उन्हें सूए मिले। उन्होंने पूछा—कल तो तुम्हारा रंग एकदम काला था आज इतने उजले

कैसे हो गये?

हंसो ने उड़ान थोड़ी करते हुए कहा—'सरवर ने ठंडे कलेजे हमें आशिष दी कि उजली पांखों हंस और हरियल सूए!' कहते ही सूओं की पांखे एकदम हरी हो गईं। पहिले सूओं का रंग कोयल के समान काला था, उस दिन के बाद से ही वे हरे होने लगे।

सूए खुशी में फड़फड़ाते, लम्बी उड़ानें भरते हुए आम के वृक्ष पर उतरे तो कोयल ने पूछा-'अरे, कल तुम्हारा रंग हमसे भी ज्यादा काला था, लेकिन आज तो तुम हरियाली को भी मात कर रहे हो। अचानक यह हो क्या गया?' सूओं ने एक साथ जवाब दिया-'सरवर ने ठंडे कलेजे हंसो को आशिष दी कि उजली पांखो हंस, हरियल सूए और कोयल मीठी वाणी।' कहते ही कोयल पंचम स्वर में कुहू कुहू करके मीठे गीत सुनाने लगी। पहिले कोयलें

कौओं से भी कहीं खराब बोला करती थीं। लोग सुनते और अपने कानों में अंगुलियां डाल लेते। उस दिन से उनका गला मिसरी से भी अधिक मीठा हो गया। सुनने वाले उसकी बोली के लिए तरसते ही रहें।

कोयल कुहू कुहू की मस्ती में मीठे गीत गा रही थी कि एक मोर उड़ता हुआ आम के उस वृक्ष पर आया। कोयल के अत्यधिक मीठे बैन सुनकर पूछा : 'अरी कोयल, यह क्या जादू हुआ? कल तो तेरे बोल आक के समान कड़ुवे थे, पर आज मिसरी से भी अधिक मीठे कैसे?' कोयल ने मीठी वाणी में जवाब दिया : सरवर ने ठंडे कलेजे हंसों को आशिष दी कि उजली पांखों हंस, हरियल सूए, कोयल मीठी वाणी और छत्तरधारी मोर।

कहते ही मोर के पीछे सुरंगी पांखो का सुन्दर छत्तर तन गया। मोर खुशी में नाचने लगा। पहले मोर मोडे हुआ करते थे। बड़े भद्दे लगते। उस

दिन से ही सुरंगी पांखो की छतरी तन गई। अब क्या कहना! नाच नाचकर सारी दुनिया के सामने अपनी पांखो पर चित्रित चंद्रमाओं का प्रदर्शन करते हैं, पहले अपनी कुरूपता के कारण छिपे छिपे रहते थे।

मोर खुशी में छतरी तानकर नाच रहा था कि मुरगे ने पूछा- अरे कल तो तू मुंह छिपाये फिरता था, आज दुनिया के सामने खुशी में मदमत्त होकर नाच कैसे रहा है? किस जादूगर ने तेरे पीछे यह सुन्दर छतरी लगाई?

मोर बोला-' सरवर ने ठंडे कलेजे हंसों को आशिष दी कि उजली पांखों हंस, हरियल सूए, कोयल मीठी वाणी, छत्तरधारी मोर और कुक्कुट कलंगी सोहें!' कहते ही मुरगे के सिर पर सुरंगी कलंगी झूमने लगी। पहले मुरगों के मोडे सिर हुआ करते थे। उस दिन से ही उनके सिर पर सुन्दर कलंगी शोभित हुई। तब से मुरगे इसी खुशी में सवेरे सवेरे बांग देते हैं।

जिस प्रकार जूं की आशिष उनको फली, उसी प्रकार सभी को फले : बात सुनाने वाले को, हुंकारा भरने वाले को, दिन के समय जगने वालों को और रात के समय सोने वालों को।

साथियो अन्ताक्षरी का यह अंक आपको कैसा लगा, अपने विचार व सुझाव हमें अवश्य लिखें।

आपके जवाब के इन्तजार में–
शिवसिंहनयाल
'अलारिप्पु' बी-6/62 पहली मंज़िल सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली–29, दूरभाष : ६१०६३२७

ज्योति लेजर टाइप सेटिंग
दिल्ली–110092